6.2.68 रात्रीक्लास– बहुत महारथी हैं जो मुरली मिस कर देते हैं। कब बाहर गए तो वह मुरलियां पढ़ते ही नहीं। मैगजीन भी बहुत बच्चें हैं जो नहीं पढ़ते हैं। यह भी बच्चे समझते हैं कि तैयारियां हो रही हैं। विनाश होगा जरूर। स्थापना तो होनी ही है। निश्चय है हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम ही रावण पर जीत पहन रहे हैं। चलते2 बच्चे कैसे ठंडे पर(पड़) जाते हैं। फिर ब्राह्मणी समझाती है बेहद का बाप वर्सा देने आये हैं। तुम गफलतें करते हो। तो फिर खड़ हो जाते हैं। ऐसे बहुतों की अवस्था उपर–नीचे होती है। माया की ग्रहाचारी लगती है तो किसको समझा न सकेंगे। इसमें तो शौक रहना चाहिए। यह तो जरूर ब्राह्मण (बन)कर फिर चले गए। वह फिर स्वर्ग में तो जरूर आवेंगे। मुक्ति में तो जाना वहां से पहले सुख भोगना है। बाप सभी को सुख का वर्सा देते हैं। सभी को वापस जाना है। इसको कयामत कहा जाता है। हरेक को अपने को देखना है कहां तक हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। हम स्वर्ग में जा रहे हैं यह तो खुशी की बात है ना। सिर्फ पुरुषार्थ करना है। जो करेंगे सो पावेंगे। टीचर का काम है पढ़ाना। जो सैम्पलिंग होगा वह कब न कब आवेंगे जरूर। अपने2 समय पर सभी आते हैं कल्प पहले मिसल। वृद्धि को पाते रहते हैं। गीतापाठशाला खोलते रहते हैं। हार्टफेल न होना है। आस्ते2 नामाचार निकलेगा। बच्चे सेकण्ड–सेकण्ड पुरुषार्थ कर रहे हैं। पुरुषार्थ हरेक सुख के लिए करते हैं। जो जितना कर सकते हैं उतना करते हैं। तुमको तो बहुत खुशी होनी चाहिए। जबकि समझते हो हमको भगवान पढ़ाते हैं। भगवान स्टुडेंट को पढ़ाते हैं। कोई की बुद्धि में नहीं बैठता तो टीचर क्या कर सकते? वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी भी पढ़ते हैं। याद की यात्रा है मुख्य। लिखते हैं बाबा तूफान बहुत आते हैं। बाबा कहते हैं माया बड़ी दुस्तर है ;परंतु यह बताने में भी बहुतों को लज्जा आती है। हम स्वर्ग के बादशाही स्थापन कर रहे हैं। कितना उत्साह होना चाहिए। इसमें गुप्त पुरुषार्थ चलता है। फूल बनना है। हम बरोबर कांटे थे। अब दैवी फूल बन रहे हैं। तो अपनी जांच करनी चाहिए। अच्छा, रुहानी बच्चों को रुहानी बाप का यादप्यार ,गुडनाइट। ओम।